...णी वितानम्

...विद्या-शोध-संस्थानम्

...ाँ, सतना (म० प्र०)

लेखकः
डा० सुद्युम्न आचार्यः
निदेशकः



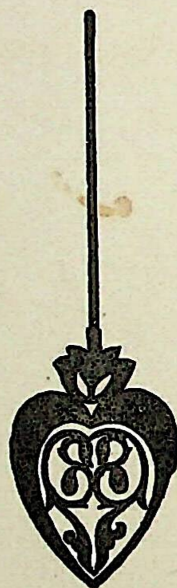
Veda Vani Vitan

Indological Research Institute

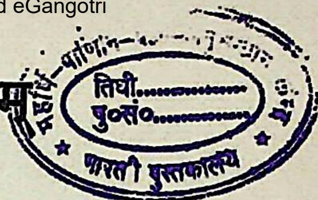
Kolgavan, Satna (M. P.)

Written by :
Dr. Sudyumna Acharya
Director

प्रकाशक :
वेद वाणी वितान
प्राच्य विद्या-शोध संस्थान
कोलगवां, सतना (म० प्र०)



मुद्रक :
श्री विश्वनाथ दत्त
दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स (प्रा०) लिमिटेड
गोदौलिया, वाराणसी ।



वेद वाणी वितानम्

प्राच्यविद्याशोधसंस्थानम्

विश्वस्य पुस्तकालये वेदोऽयं रोचिष्णुप्रकाशस्तम्भ इवाद्याप्यविचलं चकास्ति। अयमस्ति परवर्तिनां ज्ञानविज्ञानानाम् अक्षीणं प्रथमं च स्रोतः। देशस्यास्य सर्वोत्तमे प्रज्ञामेधे वेदसुधामहाह्रदे परस्सहस्राब्दत आकण्ठमवागाहेताम्। संस्कृतसाहित्ये 'निष्णात-स्नातक' शब्दौ यौ ह्रीदानीं B. A. उपाधिधारिणे प्रयुज्येते, मूलतो वेदेष्वधीतिने श्रुतिने च व्यवह्रियेते स्म। यथाहि देशस्यास्य चिन्तनं ब्रवीति तथा वेदाध्ययनं महते श्वःश्रेयसायावकल्पते, जीवनस्य सर्वोत्तमं चारितार्थ्यं चास्याध्ययनेऽभिरक्षितम्। तैत्तिरीयब्राह्मणे एका कथा प्रचरत्येवम्— "भरद्वाजो हि त्रिभिरायुभिर्ब्रह्मचर्यमुवास। तं ह जीर्णि स्थविरं शयानम् इन्द्र

वेद वाणी वितान

प्राच्य विद्या शोध संस्थान

विश्व के पुस्तकालय में वेद एक अविचल प्रकाश स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित है। यह परवर्ती समस्त ज्ञान-विज्ञान का अक्षय निधान एवं आदि स्रोत रहा है। अतएव इस देश की सर्वोत्तम मनीषा सहस्रों वर्षों से इसके पवित्र ज्ञानप्रवाह में आकण्ठ स्नान करती रही है। संस्कृत में 'निष्णात' तथा 'स्नातक' शब्द जो आज B. A उत्तीर्ण व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता है, का मूल अर्थ वेदधारा में पूर्ण स्नान करने वाला अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने वाला ही है। इस देश की चिन्तन-धारा के अनुसार वेद का अध्ययन करने से सर्वोच्च श्रेय प्राप्त होता है तथा जीवन के समय की सबसे उचित चरितार्थता उसके अध्ययन में

VEDA VANI VITAN

ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

The Vedas are still shining forth brilliantly as a pole-star amidst world's stock of human thought. They stood up as being perennial source of knowledge for the people of all ages. So Indian wisdom has had a privilege to be immersed deeply in this ocean of knowledge. The word स्नातक applied presently to a B. A. meant primarily a man having been steeped into the ocean of the Vedas. As Indian thinking goes by, the study of the Vedas provides him with high order of merit and accomplishment of life.

उपव्रज्य उवाच । भरद्वाज ! यत्ते चतुर्थम् आयुर्दद्यां किमनेन कुर्या इति । ब्रह्मचर्यमेव अनेन चरेयमिति होवाच । तं ह त्रीन् गिरिरूपान् अविज्ञातान् इव दर्शयांचकार । तेषां ह एकैकस्मान् मुष्टिमाददे । स होवाच भरद्वाज इत्यामन्त्र्य । वेदा वा एते । अनन्ता वै वेदाः । एतद् वा एतैस्त्रिभिरायुर्भिरन्ववोचेथाः । अथ त इतरदनुक्तमेव ।" (तै० ब्रा० ३।१०।११।३-४)

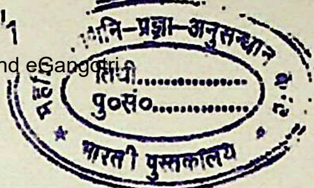
प्राचीनानां विदुषां वेदं प्रति ज्ञानं वा प्रति अतिसमीचीनेयं दृष्टिरित्यत्र नास्ति सन्देहावतारः । आधुनिके युगे महावैज्ञानिकस्य न्यूटनमहोदयस्य मतमिदं यत्—'ज्ञानोदधेः बिन्दुमात्रं चक्षुषा विषयीकृतम् । अपरिमेयाम्बुराशिस्तु चक्षुषाम्

ही निहित है। तैत्तिरीय ब्राह्मण की एक कथा में कहा गया है कि 'ऋषि भारद्वाज ने अपनी आयु के तीन भागों में वेदों का अभ्यास किया। उस समय जीर्ण शरीर वाले वृद्ध भरद्वाज के पास इन्द्र ने आकर पूछा कि यदि मैं तुम्हें आयु का चतुर्थ भाग दे दूँ तो तुम क्या करोगे। उसने कहा कि मैं वेदाभ्यास ही करूँगा। इन्द्र ने उसे पर्वत के समान ३ विशाल अज्ञात वस्तुएँ दिखाईं। उनमें से एक-एक मुट्ठी भारद्वाज के हाथ में देकर कहा कि वेद इन पर्वतों के समान अनन्त हैं। अपनी आयु के इन ३ भागों में तुमने केवल इन ३ मुट्ठियों के बराबर ही ज्ञान अर्जित किया है। शेष अभी अज्ञात ही है।'

इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन विद्वानों का वेद अथवा ज्ञान के प्रति यह दृष्टिकोण अत्यन्त समीचीन है। आधुनिक युग में महावैज्ञानिक 'सर आइजक न्यूटन' महोदय का यह कथन कि 'मैंने ज्ञान-समुद्र के एक बिन्दु को ही देखा

A story in the Taittiriya Brahmana runs thus-Bharadvaja has devoted 3 parts of life to the sacred cause of recitation of the Vedas. Then Indra came to old sage and asked "What will you do if I bless you with the fourth part of life too? "Nothing but recitation of vedic Lore, my lord" he replied Indra then gave him 3 handfuls of the soil out of 3 big mountains yonder and said that he had acquired knowledge no more than there small handfuls, whilst rest of the knowledge, so wide as these mountains, was under the veil.

In the present age, the realisation dawned upon Sir Isaac Newton, the greatest scientist of the great in his time,—"I do not know what I may appear to the world, but to myself I seem to have been only like a boy playing on the sea-shore........whilst the great ocean of truth lay all undiscovered before me". This view about knowledge holds good, because the idea that how



अस्त्यगोचरा' वस्तुत उपरितनमेवार्थं संवदति। 'क्व वेदज्ञानस्यानन्त्यं, क्व मानवस्याल्पनैपुण्यम्' इति विचारः मानवमहंकारान्मोचयति, नवज्ञानप्राप्तये च प्रेरयति।

विगते शताब्दद्वये तुलनात्मकभाषाविज्ञानस्योद्भवेन विकासेन चेतिहासादिक्षेत्रेषु महती क्रान्तिः समजायत। वैदिक संस्कृत-पारसी-ग्रीक फ्रेंच-जर्मन-एशियन इत्यादिभाषाणां तुलनात्मकमध्ययनं तथ्यमिदं प्राकाशयत् यत् एतेषां भाषाभाषिणां पूर्वजा अविदितजातिवर्गभेदाः कस्मिंश्चित् कालखण्डे समं निवसन्ति स्म। अस्य तलस्पर्शि समध्ययनं व्यज्ञापयत् यत् वैदिकभाषेयं सर्वासां भाषाणां जननीरूपेण वा ज्येष्ठस्वसारूपेण वा संवर्तते। विश्वे विद्वांसो विस्फारितचक्षुर्भ्यामनिमीलितलोचनाभ्यां तथ्यमिदमज्ञासिषुर्यत् एशियायूरोपमहाद्वीपयोर्विशाले

है, अन्य अभी अज्ञात है' उपर्युक्त मत को ही पुष्ट करता है। वेद अथवा ज्ञान की अनन्तता तथा मनुष्य की अल्पज्ञता का भाव मानव को अहंकार से मुक्त करता है तथा उसे नए ज्ञान को प्राप्ति के लिये प्रेरित करता है।

आज से लगभग १ शताब्दी पूर्व तुलनात्मक भाषाविज्ञान के उद्भव तथा विकास के द्वारा विश्व के इतिहास आदि क्षेत्रों में महती क्रान्ति हुई। उस समय वैदिक संस्कृत, पारसी, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन, रशियन आदि भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह विदित हुआ कि इन सभी भाषाओं के बोलने वाले पूर्वज कभी एक साथ रहते थे तथा वे सभी एक ही जाति या समुदाय के थे। इस गम्भीर अध्ययन ने वैदिक भाषा को अन्य सभी भाषाओं की जननी के रूप में तथा कुछ विद्वानों की दृष्टि में सबसे बड़ी बहिन के रूप में प्रतिष्ठापित किया। विश्व के विद्वानों ने विस्फारित नयनों से तथा अत्यन्त कुतूहल से यह देखा कि एशिया तथा यूरोप के विशाल भूभाग की विभिन्न

---

small a strip has as yet been explored and how much still remains terra incognita, departs a man from false-pride and puts spurs to the acquisition of new knowledge.

It is only about one century back that comparative linguistics opened up a new vista, a new horizon of intellect. A comparative study of all indo-European languages imparted to the whole of scholars the golden idea of close union among intellectual ancestors of Indian, Iranian, Roman, French, German, Russian races. Then has the Sanskrit occupied a place as honourable as that of an elder sister, or for a few scholars-that of a mother. There came light and warmth both round the world with the recognition of the fact that all the races of these wide continents have a kind of blood-relation

भूभागे वर्तमानासु विभिन्नजातिषु परस्परं रक्तसम्बन्धो वरिर्वति। अहो मनोहारिता अस्य ज्ञानस्य ! अहो विस्मयकारिता अस्यावबोधस्य !! यत् फ्रेंचजर्मनविदुषां भारतीयविदुषां च धमनीषु तेषामेव वैदिकानां रक्तं प्रवहति। अस्य प्रमाणीकरणम् अन्यभाषाभिस्सह प्रमुखतो वैदिकभाषालभ्यमित्यत्र नास्ति कश्चन सन्देहावतारः।

भाषाविज्ञानस्य शाखेयम् इतिहासपुरातत्त्व-नृतत्त्वशास्त्र-व्युत्पत्ति-शास्त्रादिक्षेत्रेषु क्रान्तये अकल्पत। परं सर्वाधिकं मन आह्लादि तथ्यमिदं यत् तुलनात्मकमध्ययनमिदं विश्वबन्धुत्वभावनां प्रत्यतिष्ठिपत्। मैक्समूलरमहोदयोऽनेन वचनेन याथातथ्यं प्रतिवेदयते—'अनितर-साधारणमिदं भाषाबन्धुत्वं न कदापि

जातियों में परस्पर रक्त सम्बन्ध है। सचमुच इस धारणा का प्रमाणीकरण कितना विस्मयजनक तथा कितना आह्लादकारी है कि आज फ्रेंच, जर्मन विद्वानों तथा भारतीय विद्वानों की धमनियों में समान रूप से उन्हीं वैदिक ऋषि, मुनियों का रक्त प्रवाहित हो रहा है !!! इसमें सन्देह नहीं कि इसके प्रमाणित होने का श्रेय अन्य सभी भाषाओं के साथ-साथ प्रमुखतः वैदिक भाषा को ही है।

भाषा विज्ञान की इस शाखा ने विश्व के इतिहास, पुरातत्त्व, नृतत्त्व-शास्त्र तथा व्युत्पत्ति-शास्त्र आदि क्षेत्रों में क्रान्ति उपस्थित कर दी। पर सबसे आह्लादकारी तथ्य यह है कि इसने विश्व बन्धुत्व की भावना को भी प्रतिष्ठापित किया। मैक्समूलर महोदय लिखते हैं कि 'इस प्रकार की भाषा बन्धुत्व की भावना का जन्म ही सम्भव नहीं था यदि भारतीय भाषा एवं साहित्य का

---

among themselves. What a thrilling motion it is ! how noble in reason and how infinite in exhilarating !! that there runs in the veins of French and German scholars the same relational blood as in those of Indo-Aryans. It is mainly to the Vedas that we owe a deep debt of gratitude for elucidation of the fact.

This branch of linguistics has brought no less than a revolution on the history, archaeology, anthropology, etymology etc. But what is more, it has extended a feeling of the closest fraternity among all Indo-European races. Well did Max Muller observe in this train "Sanskrit is substantially the same language as Greek, Latin and Anglosaxon. This is a lesson which should never have learnt but from a study of Indian language and literature and if

सम्वोभूयेत, यदि नाम भारतीयभाषाध्ययनं न प्रगाढं विधीयेत। भाषाबन्धुत्व-प्रतिवेदनमिदम् अन्यत्रास्ति दुर्लभम्।'

एषां तथ्यानामालोके नास्तीदं मननं न्यायादपेतं यत् वेदश्च वैदिक-भाषा च तासां सर्वासां जातीनां वर्तते या एशियायूरोपमहाद्वीपमधिष्ठिताः। तेषां सर्वेषां धर्माणां सम्प्रदायानां चास्ति, ये ह्यनुवेदम् अनयोर्महाद्वीपयोः प्रथिताः। नास्त्यत्र सन्देहलेशोऽपि यत् यदि कदाचन विश्वेषां जातिषु वर्गेषु चैकतामहा-प्रयास आरचयिष्यते तर्हि वेदश्च वैदिकभाषा च प्राग्रां भूमिकां निर्वाहयिष्यति।

संस्थानस्य नामधेयम्

एतद्धारणानुवर्ति संस्थानमिदं 'वेद वाणी वितानम्' इत्यन्वर्थं नामधेयं

अध्ययन न किया गया होता। विश्वबन्धुत्व का जो उपदेश हमें इस भाषा से मिला है, वह अन्यत्र कहीं भी नहीं मिल सकता था'।

इन तथ्यों के प्रकाश में यह मानना अनुचित नहीं है कि वेद तथा वैदिक भाषा उन तमाम जाति के लोगों का है जो एशिया, यूरोप आदि महाद्वीपों में फैले हैं। उन तमाम धर्मों तथा सम्प्रदायों का है जो वेद के पश्चात् इस धरती में फैले। इसमें सन्देह नहीं कि यदि विश्व की इस विघटनकारी दशा में कभी उन सभी जाति तथा वर्ग के लोगों में एकता का महाप्रयास आरम्भ किया गया तो उसमें वेद तथा वैदिक भाषा सर्वाधिक अहं भूमिका का निर्वाह करेगी।

संस्थान का नाम

इस विस्तृत धारणा के अन्तर्गत इस संस्थान का नाम 'वेद-वाणी-वितान' रखा गया है। यह माना गया है कि वेद वाणी के अन्तर्गत वैदिक भाषा तथा

India had taught us nothing else, it would have taught us more than almost any other language ever did".

In the light of the facts it is but fitting that the Veda is of all religions, of all races who have spread in time and space-within no less than 5 thousand years past, throughout the length and bredth of continents of Asia and Europe. The Vedas have thus promised a pivotal role to play in order to promote communal harmony, national unity and integrity.

The Name of the Institute

Within this broad conception of the Vedas, this institute is being built and named "Veda-Vani-Vitan" meaning to stretch out

भजते । यतो हि वेदवाग्भ्यः प्रसूताः भारतीय-भाषा अन्याश्च भारोपीय भाषाः वेदवाक्षु समवयन्ति, अतस्सर्वासामपि संवर्धनं वितानस्य कार्यक्षेत्रे संजाघटीति ।

संस्थानं पवित्रं स्मारकम्

संस्थानमिदम् अस्माकं पितृवर्याणां स्वर्गीयाणां श्रीमतां कमला-प्रसाद आर्य महोदयानां स्मृतिं समर्धयिष्यति । तेषामासीदिदमनुचिन्तनं यदन्धकारावृते समाजे दीपशिखा वेदज्ञानमेव । दीप्तिरेषा अनेकेषाम् अन्धविश्वासानां निराकृतौ सर्वथा क्षमते । अतस्ते समस्तमपि जीवनं संस्कृतस्य वेदस्य च प्रसाराय व्यत्यायन् । तेषां प्रतिदिवमनुचिन्तनमासीदेवं यत् कथं वयं संस्कृतस्य वेदस्य च गरिमाणं प्रस्तुवीमहि, एवं च 'सं श्रुतेन गमेमहि' । अतस्ते अविगणय्य दुखग्रामं, विधाय क्षय्यं कुम्भीधान्यं वेदाध्वनीनाः सम्बभूवुः । परमहो कष्टम् !! दौर्भाग्येनाकाल एव ते जरया विना देवभूयं गताः । एवं

उससे उत्पन्न होने वाली सभी भारतीय तथा अन्य देश की भाषाएँ आती हैं । अतः उन सबका अध्ययन, संवर्धन आदि इसके कार्यक्षेत्र में आता है ।

संस्थान एक पवित्र स्मारक

इसकी स्थापना हमारे पिताजी स्व० श्री कमला प्रसाद जी आर्य की पुण्य स्मृति में को जा रही है । उन्होंने यह देखा था कि इस अन्धकारावृत समाज में एकमात्र दोपशिखा वेदज्ञान तथा उसका प्रसार है । समाज में वर्त-मान अनेक प्रकार के अन्धविश्वास इस दीप्ति से निरस्त हो सकते हैं । अतः उन्होंने अपना समस्त जीवन संस्कृत तथा वेद के प्रसार के निमित्त आहुत किया । उनकी यह परिकल्पना थी कि संस्कृत तथा उसके गरिमामय पक्ष को इस देश के सामने प्रस्तुत किया जावे । अतः वे अपने जीवन में अनेक कष्टों को

---

the arms to embrace all the languages, whole of the literature written down in them relating directly or otherwise to the Vedas.

The institute as a monument

This institute is established to perpetuate the fond memory of no less a person than our father late Shri Kamla Prasad Ji Arya, a profound thinker and dedicated to hold the torch of the Vedas to dispell the gloom of ignorance. He has therefore devoted all his life without ever taking a holiday to the sacred cause of the Vedas. He has conceived an ambitious idea to make the people realise the glory of the Vedas. He there-fore going through a lot of afflictions applied himself heart and soul to the pursuit of the Vedas. But alas, he retired from the

नास्मीत् तेषामन्यदवशिष्टं ऋते स्मृतिभ्यः प्रेरणाभ्यश्च । तेषां प्रेरणाः संस्थान-रूपेण मूर्तिमद्रूपं गृह्णन्तीति सन्तोषावहो विषयः ।

संस्थानस्योद्देश्यम्

संस्थानमिदमनुनामधेयं वेदवाण्याः प्रचाराय, प्रसारायानुसन्धानाय च सकर्मकं यत्नं विधास्यति । अस्य प्रतिवर्गं विस्तरस्त्वेवम्—

वैदिकमनुचिन्तनं भारतीय इतिहासश्च—इदमस्ति तथ्यं यत् मध्यकाले वेदार्थोऽयम् अविज्ञातस्सन्निगदनैव शब्द्यते स्म । अलबेरूनी सन्दिशति यत् तस्य समये अंगुलिगणनीयाः केचन वेदार्थमनु प्रसृताः । तथा च लोके वेदं प्रति

सहते हुए भी सदा इस ओर अग्रसर रहे । परन्तु हाय ! दैवदुर्विपाक से असमय में वे काल के ग्रास बने । इस प्रकार कठिन समय के लिये शेष रह गई उनकी स्मृतियाँ तथा संघर्ष के लिये प्रेरणाएँ !! यह सन्तोष का विषय है कि उनकी प्रेरणाएँ तथा उनके स्वप्न आज इस संस्थान के रूप में ठोस आकार प्राप्त कर रहे हैं ।

संस्थान के उद्देश्य

इस संस्थान का उद्देश्य वेद वाणी का प्रचार, प्रसार तथा अनुसन्धान करना है । इसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है—

वैदिक चिन्तनधारा तथा भारतीय इतिहास—यह देखा गया है कि परवर्ती युग में वेदों का अर्थ जानने या समझने की परम्परा काफी कम हो गई थी । अलबेरूनी ने लिखा है कि उसके समय लोग वेदों के अर्थ जानने की

---

world so early in life to inherit the heavenly kingdom. He has thus left behind nothing but some of the inspirations to struggle with the time 'out of joint'. It is a relief that his integral vision of life is now embracing a concrete shape in the form of this institute.

What Vitan stands for—

The Vitan in a word stands for Research, Publication and Propagation of the Vedas and all ancillary literature. The objective is to be elaborated under following groups.

Vedic ideology and Indian history—The period succeeding that of the Vedas has hardly been receptive to the meaning of them. Going by Alberuni's word "the scholars worried little to go through the meaning of the Vedas rather than commit them to memory". Such a queer attitude of them has let in a

भ्रान्तिरतायत, प्रमाणपरिहीणो विविधो वेदार्थश्चाजायत, शुद्धार्थस्तु अनुरह-समवालुप्यत।

वितानस्य सर्व एष यत्नः यत् कथं वयं शुद्धार्थं वेदस्यानुसन्दधीमहि। शोधार्थी न धर्मशास्त्रवद् विधेयं व्यवहरति। अपितु स मुक्ताग्रहः सन् लोके सत्यं वा स्याद् दुष्टं वा—सर्वमपि वस्तुजातं विवृणोति। अनधिकारस्तस्य स्वविचारारोपणे। अवितथमिदम् आचार्यचतुरसेनस्य वचनं यत् नातोऽधिकमस्ति शोधार्थिनः कर्तव्यं यत् स प्रतिबिम्बम् इव प्रमाणानि विस्तीर्यात्। यथा कश्चन प्रतिबिम्बग्राहकः प्रतिबिम्बं विस्तारयन् प्रतिबिम्बस्य सुसूक्ष्मं वैशिष्ट्यं लक्षयति, न त्वारोपयति निजं भावम्, एवं शोधार्थी अपि प्रमाणानि द्राघयति, विश्लिष्यति,

---

चेष्टा नहीं करते। इस कारण वेदों के सम्बन्ध में बहुत सी भ्रान्त धारणाएँ प्रचलित हुईं। लोगों ने अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार वेदों से कई प्रकार के अर्थ निकालने प्रारम्भ किये। अतएव उनका अपना सही स्वरूप विलुप्त हो गया।

'वितान' का उद्देश्य है कि एक सच्चे शोधार्थी की भाँति वेदों तथा उसके विशाल साहित्य के सही अर्थ तक पहुँचने की चेष्टा की जाय। शोधार्थी का उद्देश्य धर्मशास्त्र के समान यह बताना नहीं है कि प्राचीन काल में क्या होना चाहिये था। अपितु वह तमाम पूर्वधारणाओं से मुक्त होकर प्रमाणों को इकट्ठा करके, इमानदारी के साथ उसका विश्लेषण प्रस्तुत करे। उसका यह अधिकार नहीं कि वह अपनी ओर से कुछ मिला दे। आचार्य चतुरसेन का यह कहना बिलकुल सही है कि एक सच्चे शोधार्थी का कर्तव्य है कि वह प्रमाणों को, फोटो को विस्तृत करने के समान बड़े रूप में प्रस्तुत कर दे। जिस प्रकार कोई फोटोग्राफर किसी फोटो को विस्तृत करने पर उसके स्वरूप को जरा भी नहीं बदलता, अपितु उसे बड़ा करके उसको छोटी से छोटी विशेषताओं को भी

---

number of erroneous conceptions round them. Commentators altered the interpretations of original texts by straining the meaing of words to suit their own interest.

What Vitan aims at is to disintigrate the dross and to illuminate the genuine gold of the Vedas, It is neither mean nor politic to be wise where wisdom is based on imperfect knowledge. We should therefore be free from all kind of preconceptions to collect and sift the data and to formulate the conclusion. Well has Acharya Chatursen observed "Just as a photographer enlarges the photograph to make it easy of attainment, so also is the scholar, he exposes all available evidences, enlarges them by all rational methods and lastly gives the reader understand all chare-

तान्यनु निष्कर्षं प्रयाति, परं न कदाचन निजं भावम् आरोपयति। वितानमिदं शोधकार्यें धारणामेनां वितनिष्यति।

अस्य देशस्यानवच्छिन्नपरम्परायाः क्रमिक इतिहासो न तथोपलभ्यते, यथाऽपेक्ष्यते इतिहासविद्भिः। यद्यपीतिहासकाराः महता प्रयत्नेन इतिहासस्य महान्तं भागमालोकयामासुः, तथापि सविशेषो भागोऽद्याप्यन्धतमसे निलीनं विदुषां प्रयत्नं प्रतीक्षते। इतिहासस्योद्देश्यं केवलं विभिन्नकालिकानां राज्ञां नामग्राहमनुपवर्णनेन, तेषां कार्येण, तेषां युद्धव्यूहादिचित्रणेनैव न समाप्तिमेति। ऐतिह्यमिदं वस्तुतोऽतोप्यधिकं किंचित्। विविधसम्प्रदायानां मनुजानां च प्रतियुगं धार्मिकः सामाजिकश्च व्यवहारः, तेषां मनोभावः, सम्प्रदायैः साकं परस्परं सम्बन्धः—इत्यादिकं सर्वमपि इतिहासविज्ञाने सन्निविशते। एतादृश इतिहासः न केवलमितिहासपृष्ठेष्वपितु लोककथास्वपि सूक्तिष्वपि परस्सहस्रेषु शब्देष्वपि गूढं सन्तिष्ठते। तेषां

सामने ला देता है, उसी प्रकार एक शोधार्थी अपनी ओर से कुछ मिलाये बिना उस प्रमाण को केवल बड़ा करके प्रस्तुत करने का अधिकार मात्र रखता है। 'वितान' इस धारणा के साथ विशाल वैदिक वाङ्मय पर शोध-कार्य करेगा।

इस देश की सुदीर्घ परम्परा का क्रमिक इतिहास सामान्यतः उपलब्ध है। इतिहासकारों ने इस ओर अत्यन्त स्तुत्य प्रयास किये हैं तथा बहुत बड़ा इतिहास क्रमबद्ध रूप से हमारे सामने उपस्थित करने में सफल हो चुके हैं। वे सब हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। फिर भी अभी बहुत बड़ा इतिहास अन्धकार में है। उसे प्रकाश में लाने का एक बहुत बड़ा काम बाकी है। इतिहास का केवल

---

cteristics of a point but does not leave even the slightest mark at his end. This spirit will serve the Vitan as guide-line for advancement of research-work.

We have a systematic history of our country, thanks to the profound study and patient industry of scholars of home and abroad to light many a dark corridor of history otherwise unknown. We have however no room for complacence. Much has been done and much more as yet remains to be done. History is a science not thus limited merely to the records of kings, their genealogies, their power and prestige, eulogistic ballads devoted to them time to time. History, broadly speaking, stands for all beliefs and ideologies of society. The ups and downs that our society passes through, vicissitudes of thought of various schools and groups—these are the subjects to be brought under the compass of

विश्लेषणं, संग्रहः, क्रमानुरोधि प्रकाशनं चाद्यापि न पूर्णताम् इयर्ति। एतादृशमैतिह्यं शब्दादिमुखेन विवृणुयादात्मानमिति क्रमते वितानम्।

व्याकरणं च भाषाविज्ञानं च—वैदिकं साहित्यम् अपरिमितशब्दौघ-सुरक्षायै अस्मानधिकुरुते। तस्यां शब्दगुहायाम् अनितरोपायगम्यं प्राचीन-मैतिह्यमद्यापि निलीनं विद्यते। विभिन्नजातीनां सम्बन्धः, परस्परेषु प्रभावश्च शब्दबन्धं बद्धः। परस्सहस्राणि वर्षाण्यनारतम् अनुधावतां शब्दानां यात्रा-वृत्तान्तोऽपि महते प्रमोदाय कल्पते। व्याकरणे भाषाविज्ञाने चामीषामध्ययनं सम्पद्यते। भाषाविज्ञानमिदं प्राचः कालादेव नापरोक्षं प्रेक्षावताम्। तस्य

यह उद्देश्य नहीं है कि विभिन्न कालों के राजाओं का क्रमिक वर्णन, उनके कार्य, उनकी लड़ाइयों आदि का निरूपण कर दिया जाय। अपितु विभिन्न कालों के लोगों के धार्मिक, सामाजिक आचार-विचार उनकी मनोदशायें, विभिन्न सम्प्र-दायों के साथ परस्पर सम्बन्ध आदि सभी कुछ इतिहास की परिधि में आता है। इस प्रकार का इतिहास केवल इतिहास के पृष्ठों में ही नहीं अपितु लोक कथाओं, मुहावरों, प्रचलित विश्वासों तथा विशेष प्रकार के शब्दों में भी भरा पड़ा है। उन सबका विश्लेषण करते हुए इतिहास प्रस्तुत करने का विशाल कार्य अभी शेष है। 'वितान' का उद्देश्य है कि इस ओर अपने प्रयत्न प्रारम्भ करे।

व्याकरण तथा भाषा विज्ञान—वैदिक साहित्य हमें अपार शब्द-सम्पदा उत्तराधिकार में प्रदान करता है। उन शब्दों में तत्कालीन समाज की मानसिकता, प्राचीन इतिहास जो अन्य किसी भी स्रोत से प्राप्य नहीं है, वर्तमान है। प्राचीन जातियों के परस्पर सम्बन्ध तथा उनका एक दूसरे पर प्रभाव भी इन शब्दों में छिपा हुआ है। स्वयं इन शब्दों की सहस्रों वर्षों की यात्रा का वृत्तान्त भी कम रोचक नहीं है। इन सबका अध्ययन भाषा विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। वैसे इस देश में भाषा विज्ञान का अध्ययन बहुत प्राचीन है। उस पर बहुत कार्य भी किया जा चुका है। पर लगभग

---

history. To achieve this end we ought not to rest satisfied to go through some pages of history. We should go in fact to mythology, to maxims, to proverbs, to folk tales and last but not least to the words which have still concealed all the more valuable information into their bellies. It is the investigation into such kind of history what Vitan stands for.

Science of Language and Grammar—Vedic literature has bequeathed to us a repository of words and the activities of thousands of years therein. Comparative linguistics though not unknown for ages has at present wrought wonder for all the world.

प्रगाढमध्ययनमद्यापि वर्वर्ति। पूर्वस्मिन् शताब्दद्वये तुलनात्मकभाषाविज्ञानक्षेत्रे महती क्रान्तिस्सम्बभूव। तत्र संस्कृत शब्दानां भारतीयार्यभाषाभिः भारोपीय-भाषाभिश्च तुलनया व्युत्पत्तिशास्त्रे इतिहासादिविषये च नवतथ्यान्वेषणैराश्चर्य-दर्शनो मनुष्यलोकः समवर्तत।

विषयेऽस्मिन् शोधस्यापरिमिता सम्भावना विद्यते। वैदिकभाषा भारोपीयभाषापरिवारस्यास्ति बृहत्तमा शाखा, अतः शोधक्षेत्रोऽप्यस्ति सुतमां व्यापकः। तथापि नाद्यावधि पर्याप्तं कार्यमत्र सम्पन्नम्। वेदमन्त्राणां भाषाविज्ञानाधारितं कालनिर्धारणमद्याप्यवशिष्यते। वैदिकशब्दानां ग्रीकादिभाषाभिस्तुलनया सर्वसम्भाविता व्युत्पत्ती रूपनिर्धारणं च रॉथ महोदय, टर्नरमहाशयादि-

१ शताब्दो पूर्व तुलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में महती क्रान्ति हुई है। उनके आधार पर इस देश के शब्दों का भारतीय आर्य भाषाओं तथा भारोपीय भाषाओं से तुलना प्रस्तुत करके व्युत्पत्ति शास्त्र तथा इतिहास आदि क्षेत्रों में महान् आश्चर्य उपस्थित किया गया है।

इस विधा में कार्य करने का अपार क्षेत्र तथा सम्भावनायें विद्वानों के निरन्तर परिश्रम तथा अध्यवसाय की प्रतीक्षा में हैं। वैदिक भाषा परिवार के भारोपीय परिवार की सबसे बड़ी शाखा होने के कारण यहाँ शोध का क्षेत्र भी सर्वाधिक है। पर इस क्षेत्र में अभी यहाँ बहुत कम कार्य हुआ है। कुछ गिने-चुने विशिष्ट संस्थान इस क्षेत्र में तन्मयता से प्रगाढ़ अध्ययन कर रहे हैं। पर यह पर्याप्त नहीं है। वेदमन्त्र का भाषा वैज्ञानिक आधारों पर कालक्रम नहीं तय

This branch of learning calls for a constant and patient study of a band of scholars before they explore new avenues. Indo-Aryan language group, greater as it is than all other Indo-European ones, it offers an ample scope and the great contents for research. But the greater we have taken into our disposal, the smaller we have brought into our orbit of research. The few works of comprehension done by some institutes as well as individuals, though monumental and guiding-star they are, are not as full as our linguistic sense demands. The hymns of the Veda are to be systematised in chronological order as is suggested by the science of language. The most reliable etymologies and the best appliable meanings of Vedic words are to be sorted out by the comparison of Greek and Latin proto-types parallel in forms and matters following the monumental work by R. L. Turner, Roth and Bohtlingk. A comprehensive

कार्यानुदिशमद्यापि विदुषां प्रयत्नं प्रतीक्षते। लौकिकशब्दानामपि नवीनभाषाविज्ञानानुसारेण सर्वाधिकसम्भावितव्युत्पत्तीनां प्रदर्शनं नाद्यापि परिपूर्णतामगात्। भारतीयार्यभाषान्तर्गतानां सर्वासां भाषाणां भाषावैज्ञानिकः संस्कृतार्येतरभाषाभिश्च सम्बन्धबोधकः शब्दकोशोऽद्यापि सम्पाद्यो वर्तते।

वितानमिदं सुविस्तृतवैदिकवाङ्मये शोधकार्यार्थं सर्वासां भाषाणामुन्नत्यर्थं च सर्वथा प्रयतिष्यते।

दर्शन शास्त्रम्—भौतिकान् आध्यात्मिकांश्च पदार्थान् प्रति भारतीयमनुचिन्तनं वैदिकयुगात् प्रारभ्य सर्वेष्वपि युगेषु समं प्रावर्तत। गच्छन्तु नाम शौव-

---

किया गया। वैदिक साहित्य के प्रत्येक शब्द की ग्रीक आदि से तुलना करते हुए सर्वाधिक सम्भावित व्युत्पत्ति, अर्थ तथा हर शब्द का भारतीय आर्य भाषा में बननेवाले रूपों का निर्धारण टर्नर महोदय तथा राँथ महोदय के स्तुत्य प्रयास की दिशा में आगे बढ़ते हुए करना है। लौकिक शब्दों की भी नवीन भाषा वैज्ञानिक आधारों पर सर्वाधिक सम्भव व्युत्पत्तियों को प्रस्तुत करना आवश्यक है। भारतीय आर्य भाषाओं की सभी भाषाओं का भाषावैज्ञानिक कोश तथा उनका संस्कृत तथा अन्य आर्येतर भाषाओं के साथ सम्बन्ध सिद्ध करना अवशिष्ट है।

'वितान' का यह प्रयास होगा कि भाषा वैज्ञानिक आधारों पर विशाल वैदिक वाङ्मय पर शोध कार्य तथा देश की सभी भाषाओं की समुन्नति के लिये उपाय किया जाय।

दर्शन शास्त्र—भौतिक तथा आध्यात्मिक पदार्थों के प्रति भारतीय चिन्तन इतिहास के प्रत्येक युग में निरन्तर चलता रहा है। 'प्रत्येक दशा में मेरा अध्ययन कभी वियुक्त न हो,' इस प्रकार के चिन्तन ने ही दर्शनशास्त्र

---

etymological comparative dictionary of all dialects of Indo-Aryan language family remains to be done. All these works beckon the band of scholars to apply their patient industry.

The Vitan will to its best to make an humble beginning in this direction.

Philosophy—The pronness of Indian mind to reflcetion on philosophy manifested itself through the treatises of profound philosophical knowledge and its furthest point is reached when there developed a number of diametrically different schools.

This philosophy—a Greek word meaning primarily 'knowledge of all'—has epitomized under its big name, manifold bra-

स्तिकाः विभवाः, परं मा स्म गमत् कदापि स्वाध्याय इत्येवमनुचिन्तयद्भिः दर्शन-शास्त्रं व्यस्तीर्यत। अतएव प्रतियुगं विरचिताः दर्शनग्रन्था अद्यापि समुपलभ्यते। गभीरेण चिन्तनेन सह गभीरं मतवैभिन्यं नान्तरीयकमित्यतो दर्शनशास्त्रेष्वनेके म्प्रदाया उपलभ्यन्ते।

एषु दर्शनशास्त्रेषु सर्वविधं ज्ञानं विज्ञानं च सम्मिलितमासोत्। ग्रीक-भाषायामपि दर्शनार्थकः 'Philosophia' शब्दः मूलतो ज्ञानस्नेहम् अर्थापयति।

आधुनिके युगे ज्ञानविज्ञानानाम् अतिमहति विस्तारे सति दर्शनमिदं न्यूनातिन्यूनं चतुर्षु भागेषु व्यभज्यत। तदनुसारं जडजगतः भौतिकविज्ञाने, प्राणिजगतः प्राणिविज्ञाने, वनस्पतिजगतः वनस्पतिविज्ञाने, अध्यात्मजगतश्च मनोविज्ञाने अध्ययनं सम्पाद्यते। परिष्कृतासु प्रयोगशालासु विविधयन्त्रद्वाभिः प्रयोगैः सुसूक्ष्मा अथ च निश्चितसिद्धान्ताः प्राप्यन्ते।

का विकास किया है। इसीलिए हमें अनेक युगों में रचित 'दर्शन' के ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इस गम्भीर चिन्तन के कारण विचारों में मतभेद भी स्वाभाविक था। अतएव भारतीय दर्शन में अनेक सम्प्रदाय उपलब्ध होते हैं।

इस दर्शन के अन्तर्गत विश्व के सभी प्रकार के ज्ञेय पदार्थों का अध्ययन सम्मिलित था। ग्रीक में भी इस दर्शन के समानार्थी जिस शब्द का विकास हुआ, उसका मूल अर्थ ज्ञान-प्रेम ही था।

आधुनिक युग में ज्ञान विज्ञान के अतिविस्तार के साथ इस दर्शन का कम से कम ४ भागों में विभाजन हुआ है। इसके अनुसार जड़ जगत् का भौतिकी विज्ञान में, वनस्पति जगत् का वनस्पति-विज्ञान में तथा अध्यात्म का मनोविज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है। विभिन्न प्रयोगशालाओं तथा यन्त्रों के विकास के द्वारा नवीन निष्कर्षों में परिपूर्णता तथा निश्चितता भी प्राप्त की जा चुकी है।

---

nches of learning what are studied presently under different specific names—Physics, Zoology, Botany, and Psychology. Modern science has, no doubt, made a marvellous progress and reached the highest level of accuracy.

But it is far from being the case with Indian philosophy. The principles of philosophy flourished centuries ago, are still readily submitted to, without judging pros and cons in the light of modern scientific observations and we have not a single case to have been rejected or professed on reflection unanimously by all schools of philosophy.

परं भारतीयदर्शनशास्त्रं न तथा नैश्चित्यमावहति, यथाऽद्यत्वेऽभीप्स्यते। विभिन्नसम्प्रदायेषु प्रक्रान्ताः सिद्धान्ता अद्यापि तेषु तेषु सम्प्रदायेषु यथातथं मान्याः। सर्वेऽपि सम्प्रदाया अपरान् प्रत्युद्यतगदास्तिष्ठन्ति। परं न कोऽपि कदाचन अपरसिद्धान्तं वृणीते। दर्शनशास्त्रेषु नास्ति कोऽपि सिद्धान्तो यः पुनरीक्षणायाम् अपरसिद्धान्ताद् गृहीतः स्यात् सर्वैर्वा सम्प्रदायैः निषेध्यरूपेण वा विधेयरूपेण वा गृहीतः स्यात्।

दर्शनशास्त्रसिद्धान्ता इमे पूर्ववर्तिषु युगेषु विरचिताः। आधुनिकविज्ञानस्यालोके दर्शनग्रन्था नैव निर्मिताः। एवं प्राचि परिष्कारयुता अपि ग्रन्था आधुनिकदृष्ट्या अपरिष्कृता एवाधीयन्ते अध्याप्यन्ते च। परं संस्कृतविधा भौतिकविज्ञानमधिजिगांसमानांश्छात्रान् जराजीर्णान् दर्शनशास्त्रसिद्धान्तानध्यापयन्तो वयं कथं न्यायपथमनुसरामः? किं संस्कृतसेवाविधानाय प्रमाणपरिहीणभौतिक-

पर भारतीय दर्शन में उस स्तर की निश्चितता का अभाव है। दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों में जो सिद्धान्त विकसित हुए वे सभी उन २ सम्प्रदायों में यथावत् मान्य हैं। सभी सम्प्रदाय एक दूसरे का खण्डन करते हैं। पर कोई किसी अन्य के मत को नहीं मानता। ऐसा कोई भी सिद्धान्त नहीं, जिसे किसी विशेष तर्क के प्रकाश में सबने समान रूप से निषेध्य या विधेय मान लिया हो।

भारतीय दर्शन में यह विडम्बना भी है कि उनके सिद्धान्त सदियों पुराने हैं। आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा में दर्शन ग्रन्थ विकसित नहीं हुए हैं। इस दशा में वे ही ग्रन्थ परिष्कार के बिना पढ़े पढ़ाये जाते है। पर संस्कृत भाषा के द्वारा भौतिकी का अध्ययन करने वाले छात्र को वही अप्रमाणित तथ्यों को पढ़ने के लिए क्यों बाध्य किया जाना चाहिये? क्या संस्कृत की सुरक्षा के नाम पर उन्हीं प्रमाणविहीन सिद्धान्तों को पढ़ते रहना आवश्यक है? क्या

We should also feel no restraint to admit that we have to read such old principles in the name of Sanskrit and philosophy as to have lost their meaning and have been rejected without ceremony. As we love Sanshkrit; are we to read and teach such principles as to have been out of court? Why should we forsed to read and teach in the curriculum the same principles for no better reason than that we have committed to safeguard the Sanskrit? Will this divine tongue shut itself to speak new scientific thought? These are some of the burning questions that we should immediately attend to.

The Vitan will do all its endeavour after application of modern science in Indian philosophy that becomes a clarion call

सिद्धान्तप्रचारकैरस्माभिरवश्यभाव्यम् ? किं प्राचि प्रचलिता परिष्कारपद्धतिरद्य निलयाय गमिष्यते ? किं नवीनसिद्धान्ताभिव्यंजने भाषासौ जोषमालम्बिष्यते ? वस्तुतो गभीरा इमे प्रश्ना सर्वेषां संस्कृतसेविनां ध्यानमाकर्षन्ति ।

वितानमिदं नवीनविज्ञानालोके दर्शनशास्त्रस्य पुनरीक्षणाय क्रंस्यते । नवीनविज्ञानस्य सम्मानं, दर्शनशास्त्रेषु स्थानप्रदानं चाधुनिके युगे परमावश्यकम् । पुराणमित्येव साधु सर्वमिति मत्वा तमसि विचरणं नास्ति समंजसम् । 'सत्यं परं धीमहि' इत्येवं राध्नुवद्भ्यः शोधार्थिभ्यः नास्ति सत्यात् परो धर्मः । सत्यान्वेषणयात्रायाम् आचार्याणां समालोचनं न सम्मानमपक्षिणोत्यपितु तत् अह्नोति तेषां

प्राचीन काल में प्रचलित परिष्कार पद्धति अब लुप्त हो जायेगी ? क्या नये सिद्धान्तों के प्रकाशन में यह भाषा चुप रह जायेगी ? यह एक ज्वलन्त और गम्भीर प्रश्न है, जिस पर सबको विचार करना आवश्यक है ।

'वितान' का यह प्रयास होगा कि वह नवीन ज्ञान विज्ञान के प्रकाश में भारतीय दर्शन को पुनरीक्षित करें । नवीन विज्ञान को सम्मानित करना तथा उसे दर्शन में स्थान प्रदान करना हमारा पवित्र कर्तव्य है तथा युग की परम आवश्यकता है । शोधार्थी का वह मन्दिर जहाँ सत्य ही परम आधार है, उसे उस सत्य के अलावा अन्य कुछ नगण्य ही समझना चाहिये । सत्य की इस एकान्त यात्रा में की गई उस आचार्य की समालोचना से उसका सम्मान बढ़ता ही है, घटता नहीं । अतः वितान का यह प्रयास होगा कि दर्शन शास्त्र को नवीन विज्ञान से समुल्लसित करें ।

सामासिक संस्कृति—इस देश को अतिप्राचीन संस्कृति सभी के उद्योग

---

of hour. A researcher dedicated to the sanctuary of 'more light, more truth, more facts' takes every effort to catch but a light of truth. A healthy criticism of previous 'Acharyas' shall uphold their honour in sprit rather than bring them low.

Varied and Mixed Culture

Indian culture is reasonably called as a composite one. It has gloried in by Dravidians, by aborigines and no less than Indo-Aryans and this unity of treatment is to be traced out in all fases of history. Here it was that a large number .of Siddhas and Santas and the Vedikas have sprung up to have a large share in bringing this culture high but no share of credit. How can we forget hundreds of Santas like Raidas Kabir, Dadu etc. Who raised our culture ro high altitude of thoght. How can we further forget the Shudars like 'Kavash Ailush' and the son of

यशः । अतः वितानमिदं संस्कृते विज्ञानसंवर्धनाय प्रयतिष्यते ।

सामासिकी संस्कृतिः—सा नः प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा विश्वेषामुद्योगेनाद्यापि समुल्लसति । अस्याः निर्माणे न केवलं वैदिकार्या, अपितु द्रविड़ा अपि आदिवासिजना अपि समम् उदयुंजत । जनं बिभ्रतो बहुधा विवाचसः नानाधर्माणः वर्गाः अस्याः निर्माणे उदतिष्ठन्त, अस्यां च समवायन् । एवं वैदिकैः सह संख्यातिगानाम् अनामजातिकानां पणाय्यचरितानां महात्मनां महता यत्नेन संस्कृतश्च संस्कृतिश्च सन्दीप्यते । अस्य चिन्तनोपबृंहणे रैदास, कबीर, दादू, मंझन, प्रभृतीनां सतामुद्योगः कथं विस्मर्यताम् ? 'कवश ऐलूष' नाम्नश्शूद्रस्य वेदमन्त्रदर्शनयत्नः, अज्ञातपितृकस्य इतरापुत्रस्य ऐतरेयब्राह्मणनिर्माणे प्रयत्नश्च कथंकारं स्मृतिपथादवलोप्यताम् ? अतो वैदिके साहित्ये चास्ति सर्वेषामधिकारः ।

अस्याधिकारस्यावबोधनाय वितानं सततं प्रयतिष्यते । वेदमन्त्रपाठेषु विभिन्नसंस्कारेषु, पूजादिषु, संस्कृतिसंवर्धनकार्येषु च सर्वेषामस्ति सायुज्यमिति प्रचाराय, अथ च साम्प्रदायिकैक्यसम्पादनाय वितानमनारतं प्रक्रंस्यते ।

से विभूषित होती रही है । इसके निर्माण में केवल वैदिक आर्य ही नहीं, अपितु द्रविड़ तथा आदिवासी लोग भी सदा प्रयत्नशील रहे हैं । इस प्रकार वे सभी इस संस्कृति के सदा अंग बने रहे । वास्तव में यहाँ वैदिकों के साथ असंख्य अनाम जातिवाले सिद्धों तथा सन्तों के प्रयत्न से यह संस्कृति सुशोभित हुई है । इसके चिन्तन को सुशोभित बनाने के लिए रैदास, कबीर, दादू, मंझन इत्यादि सन्तों के उद्योग को किस प्रकार भुलाया जा सकता है । यहाँ वेदमन्त्र के दर्शन के लिए कवश ऐलूष जैसे शूद्र को तथा ऐतरेय ब्राह्मण के निर्माण लिए अज्ञातपितृक 'इतरा' के पुत्र को कैसे भुलाया जा सकता है । इस प्रकार इस संस्कृति का ताना तथा बाना विभिन्न लोगों ने मिलकर बनाया है । इस पर सबका समान रूप से अधिकार है ।

इस अधिकार के अवबोधन के लिए 'वितान' सदा प्रयत्नशील रहेगा । वेदमन्त्र-पाठ, संस्कार तथा संस्कृति संवर्धन के सभी कार्यों में सबका समान अधिकार है, इस अवबोधन के द्वारा साम्प्रदायिक एकता की स्थापना के लिये 'वितान' निरन्तर उद्योग करेगा ।

'Itara' who won applause and admiration by their famous compositions. Ours is thus a mixed culture the warp of which has been woven by one whilst the weft has been definitely by another. The claim of all the races of India is thus justifiable upon whole of the fabric of Indian culture.

The Vitan will address itself to make the people realise to their legitimate claim and to promote thereby communal harmony and national integrity.

संस्थानस्य कार्यम्

उद्देश्यमिदमालक्ष्य संस्थानस्य कार्यविधिर्भवेदेवम् :—

१—वैदिकसाहित्यग्रन्थानां प्रकाशनं, वितरणं, प्रचारश्च। आधुनिके युगे वैदिकचिन्तनधारायाः प्रासंगिकतानिरूपणं प्रसारश्च। विश्वस्मै लघुरोचकग्रन्थानाम् अथ च गभीराध्ययनाय बृहद्ग्रन्थानां च प्रकाशनम्। वैदिकसंस्कृतिमधिकृत्य आधुनिकवैज्ञानिकपद्धत्या शोधः, तुलनात्मकं समीक्षात्मकं चाध्ययनम्।

२—वैदिकसंस्कृत्या साक्षाद् वा परम्परया वा सम्बद्धासु भाषासु आधुनिकभाषाविज्ञानानुपदं कोशव्याकरण शोधग्रन्थादिनिर्माणम्। इतिहासस्य प्रकीर्णविषयेषु

संस्थान के कार्य

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये संस्थान प्रमुख रूप से निम्न कार्य सम्पादित करेगा—

१. वैदिक साहित्य तथा संस्कृति से सम्बद्ध ग्रन्थों का प्रकाशन, उनका वितरण, प्रचार आदि करना। आधुनिक युग में वैदिक चिन्तनधारा की प्रासंगिकता का निरूपण तथा उसका प्रसार करना। जनसामान्य के लिये छोटे तथा रोचक तथा गम्भीर अध्ययन हेतु बृहत् ग्रन्थों का प्रकाशन करना। वैदिक संस्कृति से सम्बद्ध सभी विषयों पर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा लेते हुए तुलनात्मक, समीक्षात्मक अध्ययन तथा शोध करना।

२. वैदिक संस्कृति से सभी प्रन्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध भाषाओं पर आधुनिक भाषा वैज्ञानिक आधारों पर कोश, व्याकरण, शोधग्रन्थ आदि तैयार करना। भाषागत साक्ष्य पर इतिहास के अनेक विषयों पर अतिरोचक

The Functions of Institute

The following are some of the functions of the Vitan to score the goal—

1. To compose and to bring out the books on Vedic literature and culture. To propound and to propagate the relevance of the concepts of the Vedas in the modern age. To undertake comparative and critical research work on all aspects of Indian culture by all scientific and rational methods.

2. To prepare the grammar, the dictionaries of Vedic and cognate languages and dialects in the light of modern linguistics. In order to supply most interesting information on various aspects of Indian history out of the words gleaned from all

अतिरोचकप्रमेयप्रकाशनाय अनुशब्दसाक्ष्यं 'रोचन्तां शब्दभूमयः' इति पुस्तकं प्रकाशितं वर्तते। अथ च भाषाव्याकरण शब्दव्युत्पत्तिलौकिकन्यायादिद्वारा भारतैतिह्यस्य विविधपक्षप्रकाशनाय 'भाषाभाषितं भारतैतिह्यम्' इति वृहत्पुस्तकमप्यन्वक्षं सम्पादयिष्यते। पाणिनीयनिर्वचनानां पृथक् समीक्षां विधातुं शोधग्रन्थोऽचिरं प्रकाशयिष्यते।

भाषाक्षेत्रे बघेलीभाषामपि सम्मानिते स्थाने स्थापयितुं बघेलीसाहित्यस्य संकलनं बघेलीभाषायाः व्याकरणस्य निर्माणमपि शीघ्रं हस्तवर्तं संवर्तिष्यते।

अवधीबघेलीभाषाया व्यापकं महत्त्वमालक्ष्य 'अवधीबघेलीभाषाया व्युत्पत्तिमूलकः शब्दकोशः' इति विशालं कोशं निर्मातुं साम्प्रतं क्रमते वितानम्। अस्मिन्नेकैकशब्दानां सर्वथा न्यायादनपेता व्युत्पत्तिः, अपभ्रंशरूपाणां विविध-

---

जानकारी देने के लिए 'रोचन्तां शब्दभूमयः' पुस्तक प्रकाशित की गई है। इसके साथ ही भाषा, व्याकरण, व्युत्पत्तियाँ, लौकिक मुहावरे आदि के आधार पर भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों की जानकारी के लिए 'भाषागत साक्ष्य पर भारतीय चिन्तन का इतिहास' नामक बृहत् शोधग्रन्थ निर्मित किया जा रहा है। नवीन वैज्ञानिक आधार पर पाणिनीय निर्वचन की समीक्षा के लिए एक अलग शोधग्रन्थ तैयार किया जा रहा है।

बघेली भाषा को सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए बघेली साहित्य का संकलन, बघेली भाषा का व्याकरण आदि तैयार करने का कार्यक्रम बनाया जा रहा है।

अवधी, बघेली के व्यापक महत्व को देखते हुए 'अवधी, बघेली का व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश' तैयार करने की एक विशाल योजना प्रस्तावित है। इसमें प्रत्येक शब्द की अधिकतम सम्भव व्युत्पत्ति, इनके अपभ्रंश रूप, विभिन्न युगों में प्राप्त विभिन्न ध्वनियों तथा अर्थ, उन अर्थों को सम्पुष्ट करने के लिये १०वीं शताब्दी के पश्चात् प्राप्त अवधी बघेली के महत्वपूर्ण ग्रन्थों से

---

walks of life, 'A novelty of the words' has recently been brought out. A work of comprehension "Indian heritage, as reflected by linguistics" admitting of ideas and beliefs through isolated words scattered in our literature, rendering the coverage of vast and varied field of Indian Culture is being composed. For complete and thorough study of Paninian etymology "A critique on Panini's Ashtadhyayi, in the light of modern linguistics" is in the process of being composed and published.

In order to accord a place of honour to the Bagheli language a programme of tabulating and cataloging of Bagheli literature and that of composing of Bagheli Grammar will be chalked out.

युगेषु विभिन्नध्वनिपरिवर्तनार्थपरिवर्तनानां च विवरणम्, अपि च ध्वन्यर्थपरिवर्तनं प्रमाणयितुं प्राचीनेभ्योऽवधीबघेलीग्रन्थेभ्यः कालक्रमानुसारम् उद्धरणानि प्रदास्यन्ते। एतेषां शब्दानां मूलमन्वेष्टुं शब्दा एते अर्धमागधीशब्दैस्सह संयोजयिष्यन्ते, अथ च लौकिकवैदिकसंस्कृतशब्देष्वपि एतेषां मूलान्यन्वेषयिष्यन्ते। एवं शब्दकोशोऽयं शब्दमाध्यमेन अवधीबघेलीक्षेत्रस्य कलां, संस्कृतिं, गाथां, विश्वासं च निरूपयिष्यति। ऐकान्तिकमात्यन्तिकं चोत्कर्षं विधातुं 'कम्प्यूटर' प्रभृतीनि वैज्ञानिकान्युपकरणानि उपयोक्ष्यन्ते।

३—संस्कृतसाहित्यम् आधुनिकज्ञानविज्ञानेन परिपोषयितुं संस्कृतादिभाषासु ग्रन्थप्रकाशनम्। दर्शनशास्त्रस्याधुनिकविज्ञानेन सह तुलनात्मकं समीक्षात्मकं

कालक्रमानुसार उद्धरण प्रदान किये जावेंगे। इन शब्दों के मूल को जानने के लिए इन्हें अर्धमागधी शब्दों के साथ सम्बद्ध किया जावेगा तथा लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के शब्दों में भी इनके मूल की खोज की जावेगी। इस प्रकार यह शब्दकोश शब्दों के माध्यम से अवधी वघेली क्षेत्र की कला एवं संस्कृति, गाथा तथा विश्वासों को रूपायित करेगा। उत्कृष्टता की प्रत्येक सम्भाव्य सीमा तक पहुँचने के लिये कम्प्यूटर इत्यादि वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया जावेगा।

३. संस्कृत को आधुनिक ज्ञान विज्ञान से सम्बद्ध करने हेतु संस्कृत भाषाओं में ग्रन्थ निकालना। दर्शन शास्त्र के सिद्धान्तों की आधुनिक विज्ञान से तुलना करते हुए नवीन वैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर उनका समर्थन या समीक्षा करना। इसके लिए 'अधिविज्ञानं दर्शनशास्त्रम्' नामक विशाल ग्रन्थ

Keeping in view the great importance of Avadhi- Bagheli language, the Vitan conceives a comprehensive plan of a big project on 'An Etymoligical Dictionary of Avadhi Bagheli Languages." It will provide the most suitable etymoligies, corresponding Apabhransh forms, various sounds and senses adopted at times equipped with elucidations and quotations from ageold and timehonoured texts in chronological order. All the words will be associated with the Ardhamagadhi words and the origin of them will be traced out from corresponding words of classical and Vedic Sanskrit. The dictionary will thus cover the vast and veried region of Avadhi and Bagheli illustrating through the words its arts and culture, myths and beliefs. The computer and other scientific instruments will be utilized to reach every possible level of accuracy.

3. In order to give a new approach to Indian philosophy, a through study is being done in the light of modern science.

चाध्ययनं विधास्यते। एतत्सिद्धये 'अधिविज्ञानं दर्शनशास्त्रम्' इति विशालो ग्रन्थोऽतिशीघ्रं प्रकाशमेति। संस्कृते वैज्ञानिकतथ्यानां समावेशविषये जनेषु जागरूकता-प्रचाराय हिन्दी, संस्कृत, इंग्लिशभाषायां पुस्तिकाः प्रकाशिताः वर्तन्ते। विषयेऽस्मिन् प्रपत्रलेखादिमाध्यमेन व्यापकमान्दोलनं संचाल्यते। 'दर्शनशास्त्रेष्वाधुनिकविज्ञानं कथंकारं सन्निविशताम्' इति परिज्ञानाय जन-सम्मतयः संग्रहीष्यन्ते।

४—संस्कृते परीक्षोपयोगिग्रन्थाः, जनोपयोगिग्रन्थाः, लेखाः, पत्रिकाश्चानारतं प्रकाशयिष्यन्ते।

५—संस्कृतं विश्वेषां संवर्तते, अथ च संस्कृतिसंवर्धने सर्वेषां सायुज्यमिति प्रचाराय, एवं च साम्प्रदायिकैक्यप्रतिष्ठापनाय निरन्तरमुद्योगो विधास्यते।

अतिशीघ्र प्रकाशित किया जा रहा है। संस्कृत में वैज्ञानिक तथ्यों के समावेश के विषय में जनसामान्य में जागृति उत्पन्न करने के लिये हिन्दी, संस्कृत, इंग्लिश में पुस्तिकाएं प्रकाशित की जा चुकी है तथा प्रपत्रों, लेखों आदि के माध्यम से व्यापक आन्दोलन चलाया जा रहा है। इस विषय में विभिन्न सम्मतियों को जानने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण कराने की योजना है।

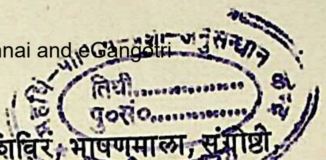
४. संस्कृत के परीक्षोपयोगी ग्रन्थ तथा अन्य जनोपयोगी रोचक ट्रैक्ट, पत्रिकाएं लेख आदि प्रकाशित करना तथा प्रचारित करना।

५. संस्कृत को सभी वर्गों का प्रचारित करना तथा इस देश की विशाल सामासिक संस्कृति के आधार पर साम्प्रदायिक एकता की स्थापना करते हुए देश की एकता तथा अखण्डता के लिए निरन्तर कार्य करना।

The result of it is constituted in a comprehensive book 'The Concepts of Philosophy, adopted to the modern science, that is coming soon to redaction. In order to arouse an interest on the subject among the masses, the booklets in Hindi, Sanskrit and English have been published and a movement is waged through articles, pamphlets and seminars etc. A comprehensive survey will be made to be acquainted with the shades of thought of people on the inclusion of sciential beam in Sanskrit.

4. To publish and elicit tracts, booklets, leaflets, journals in order to awaken the commonman to the problems of Sanskrit.

5. To give impetus to communal harmony and national integrity by the exposition of the thread of unity that runs all through



६—संस्कृतसाहित्यस्य समुन्नत्यै सामान्यविशेषकक्षाः, शिविरं, भाषणमाला, संगोष्ठी, प्रतियोगिता, गीतं प्रहसनं, नाटकादीन्यायोजयिष्यन्ते। योगसाधनाविधानेन रोगनिवारणाय मनोव्याध्युपचाराय, स्वास्थ्यसंवर्धनाय च योगकक्षाः, प्रायोगिकाभ्यासादयश्चायोजयिष्यन्ते।

संक्षेपतस्संस्कृतसाहित्यस्य सर्वेषु पक्षेषु, सर्वासु भाषासु, सर्वैरुचितोपायैः वैज्ञानिकः शोधः, प्रचारः, प्रसारः, पुनरुज्जीवनं च वितानस्य कार्यक्षेत्रे समुल्लसति।

---

६. संस्कृत साहित्य के समुन्नयन के लिए सामान्य तथा विशेष कक्षाएं, शिविर, सेमिनार, भाषणमाला, संगोष्ठी, प्रतियोगिता गीत, प्रहसन, नाटक आदि की व्यवस्था करना। यौगिक उपायों द्वारा रोगनिवारण तथा मनोव्याधि के उपचार तथा उत्तम स्वास्थ्य के संवर्द्धन के लिये योग की कक्षा, प्रायोगिक अभ्यास, शिविर आदि की व्यवस्था करना।

संक्षेप में संस्कृत साहित्य के सभी पक्षों पर, इससे सम्बद्ध सभी भाषाओं पर, अधुनातन प्राप्त सभी उपायों द्वारा वैज्ञानिक आधारों पर शोध, प्रचार, प्रसार, लुप्त तथ्यों के पुनरुज्जीवन आदि 'वितान' के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत हैं।

---

the immensity and diversity of India and that is visible in the long series of Sanskrit and Prakrit compositions.

6. In order to develop the Sanskrit literature special classes, seminars, lectures, symposium, debates and cultural programmes will be conducted. The Vitan will also cunduct the classes of Yoga to preach and practise the Yoga hygine in order to maintain bodily fitness and mental relaxation.

In a nutshell, the Vitan will endeavour with all its might, by all rational methods to preserve all the values, to promote all the aspects, to revitalise all the languages that have raised our culture to the pinnacle of excellence during all through ages of history.



वेद वाणी विता

मुख्यं वैशिष्ट्यम्—

१— वेददर्शनशास्त्रभाषाशास्त्रशब्दकोशादि
ग्रन्थानां प्रसिद्धानां पत्रिकाणां च परं

२— व्याकरणभाषाविज्ञानविषये, दर्शनभौ
स्वप्रकाशितानां ग्रन्थानां प्रकृष्टं कदम्बकम् ।

३— सुसज्जितानि भवनानि, विशालं सभाभवनं वाचनालयश्च ।

VEDA VANI VITAN

HIGHLIGHTS :

1– The magnificent library comprising reputed Journals and Precious Books on the Veda, Philosophy, Linguistics and the Dictionaries etc.

2– The stock of our publications on the grammar with linguistics and the philosophy with physical science.

3– The Well Furnished Rooms, Spacious Hall and Reading Room.